विशेष 12

बुनियादी साक्षरता एवं संख्याज्ञान*

उद्देश्य

2025 तक पाँचवी कक्षा एवं उससे ऊपर के सभी विद्यार्थी बुनियादी साक्षरता एवं संख्याज्ञान अर्जित कर सकें

पढ़ने-लिखने की क्षमता और संख्याओं के साथ बुनियादी संक्रियाएँ करने की दक्षता, स्कूल के साथ ही भविष्य में भी सीखने-समझने के लिए एक आवश्यक एवं अनिवार्य अपेक्षा है। हालाँकि कई सरकारी और गैर-सरकारी सर्वेक्षण के बाद ये स्पष्ट रूप से चिह्नित किया गया है कि वर्तमान समय में सीखने से संबंधित कई बुनियादी कौशलों से विद्यार्थियों की एक बड़ी संख्या वंचित है। यह संख्या पाँच करोड़ तक आँकी गई है। वे प्रारंभिक शिक्षा में बुनियादी साक्षरता एवं संख्याज्ञान, जैसे— साधारण वाक्यों को पढ़कर समझने की योग्यता और सामान्य जोड़-बाकी करने से वंचित हैं।

कई अध्ययनों से पता चलता है कि वर्तमान शैक्षिक प्रणाली में, एक बार जब छात्र मूलभूत साक्षरता और संख्याज्ञान में पिछड़ जाते हैं तो वे वर्षों तक उसी स्तर पर बने रहते हैं। कई सक्षम छात्रों ने खुद को इस दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति में पाया है। वे इससे उभरने में असमर्थ हैं। कई छात्रों के लिए, यह स्कूल में उपस्थित नहीं होने या पूरी तरह से छोड़ने के लिए एक प्रमुख कारण बन गया है। शिक्षकों ने वर्तमान की इस समस्या की व्यापकता के कारण अत्यधिक कठिनाई का सामना किया है। उन्हें किसी कक्षा के अनिवार्य पाठ्यक्रम को पूरा करने में भी काफ़ी मुश्किल होती है— इस कारण बड़ी संख्या में छात्र पीछे छूट गए हैं।

इस संकट को तुरंत प्रभाव से चिह्नित करना अनिवार्य है ताकि बुनियादी सीखना स्कूलों में सुनिश्चित किया जा सके, और सभी छात्रों को गुणवत्तायुक्त शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिल सके। यदि जल्द ही कार्रवाई नहीं की जाती है, तो अगले कुछ वर्षों में देश, सीखने की प्रणाली और साक्षरता से करीब 10 करोड़ या अधिक छात्रों को खो सकता है। यह संख्या काफ़ी बड़ी है। साधारणतया कोई देश भी इसकी अनुमति नहीं देता है। करोड़ों व्यक्तियों की संख्या एक देश के लिए काफ़ी बड़ी है।

सभी बच्चों के लिए मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता को बनाए रखना तत्काल रूप से एक राष्ट्रीय अभियान बनना चाहिए। अपने स्कूल, शिक्षक, अभिभावकों और समुदायों के साथ छात्रों को महत्वपूर्ण लक्ष्य और अभियान को पूरा करने के लिए हर तरह से तत्काल सहायता और प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। यही वास्तव में भविष्य में सीखने का आधार भी बनाता है।

© NCERT not to be republished

---

* *नई शिक्षा नीति (प्रारूप), 2019, भारत सरकार*

सीखने का संकट एवं इसके मूलभूत कारण

छात्रों का एक बड़ा हिस्सा जो प्राथमिक स्कूल के वर्षों के दौरान पीछे रह जाता है, वह वास्तव में पहली कक्षा के शुरुआती कुछ सप्ताहों में ही पिछड़ जाता है। इस वर्तमान संकट का एक बड़ा कारण बच्चों के स्कूल आने के पहले की तैयारी में कमी से जुड़ा है। यह समस्या पहली पीढ़ी के शिक्षार्थियों और उन बच्चों के साथ है, जिनकी पूर्व-प्राथमिक शिक्षा तक पहुँच नहीं है। यह बड़ी संख्या में उन बच्चों को प्रभावित करता है जो वंचित सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि से आते हैं।

प्रारंभिक वर्षों की स्कूली शिक्षा भी बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान पर बहुत कम ज़ोर देती है, जैसे— भाषाओं के पढ़ने, लिखने-बोलने एवं गणितीय विचारों और सोच पर। वास्तव में, प्रारंभिक ग्रेड में पाठ्यक्रम रटने और अधिक यांत्रिक शैक्षणिक कौशल की ओर बहुत तेज़ी से बढ़ता है, जबकि बुनियादी दक्षताओं की तरफ उचित ध्यान नहीं दिया जाता है।

सिद्धांत: किया यह जाना चाहिए कि छात्रों को पढ़ने, लिखने, बोलने, गिनने, गणित, गणितीय और तार्किक सोच, समस्या को सुलझाने और रचनात्मक होने की तैयारी कराकर एक ठोस आधार दिया जाए। इससे भविष्य में उनका, सभी तरह का सीखना अधिक तेज़, अधिक सुखद और अधिक वैयक्तिकृत एवं जीवनपर्यन्त आसान हो जाएगा। प्रारंभिक स्कूलों के पाठ्यक्रम और शिक्षण, शिक्षाशास्त्र के इस सिद्धांत को ध्यान में रखते हुए ही डिज़ाइन किया जाना चाहिए।

शिक्षकों की क्षमता भी मूलभूत कौशल की प्राप्ति में एक केंद्रीय भूमिका निभाती है। वर्तमान में, कुछ शिक्षकों को ही एक बहुस्तरीय, खेल-आधारित तथा छात्र-केंद्रित शिक्षण शैली में प्रशिक्षित होने के अवसर मिला है। एक अनुसंधान के अनुसार प्रारंभिक कक्षा, विशेष रूप से ग्रेड 1 और 2 के छात्रों के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है। बच्चे अपने स्कूल के शुरुआती वर्षों में स्वाभाविक रूप से विभिन्न स्तरों और गति के साथ सीखते हैं, जबकि वर्तमान औपचारिक प्रणाली बहुत ही सामान्य स्तर से शुरू होती है और सभी के लिए एक जैसी ही होती है, इसलिए कई छात्र तुरंत पीछे होने लगते हैं।

शिक्षक की पदस्थापन से संबंधित पहलू भी संकट का एक और कारक है। शिक्षक की पदस्थापन या शिक्षकों का अभाव— जो कभी-कभी खेल-आधारित शिक्षण, बहुस्तरीय और व्यक्तिगत सीखने के लिए एक बाधा बनता है। शिक्षक-विद्यार्थी संतुलन (पी.टी.आर.) यदि 30:1 से अधिक होता है, जो कि अकसर वंचित इलाकों में देखा जाता है, वह भी बच्चों के सीखने को प्रभावित करता है। कुछ और पहलू भी हैं, जैसे शिक्षक यदि कहीं बाहर से पदस्थापित होकर आता है तो वहाँ बच्चों एवं शिक्षकों के बीच भाषा संबंधित बाधाएँ आती हैं। बच्चे इस बात से संघर्ष करते रहते है कि जिस भाषा में उन्हें पढ़ाया जा रहा है वो उनकी भाषा नहीं है या उनके आस-पास नहीं बोली जाती।

एक अजनबी भाषा में अवधारणाओं पर समझ बनाना बच्चों के लिए मुश्किल होता है और उनका

© NCERT not to be republished

ध्यान भी अकसर इसमें नहीं रहता है। यह बहुत पहले ही और अच्छे तरीके से स्थापित हो चुका है कि शुरुआती दिनों में बच्चों को अगर उनकी मातृभाषा में सिखाया जाए तो वो काफ़ी सहज महसूस करते हैं और उनका सीखना भी तेज़ और अच्छा होता है।

बच्चों का स्वास्थ्य और पोषण, सीखने के संकट में एक और महत्वपूर्ण कारक है जिसे अनदेखा नहीं किया जा सकता। यह अच्छी तरह से प्रलेखित है कि पोषण, सीखने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, विशेष रूप से शुरुआती वर्षों में। असलियत यह है कि हमारे बहुत से बच्चों को पर्याप्त मात्रा में आवश्यक पोषण, (गुणवत्ता और मात्रा दोनों संदर्भों में) प्राप्त नहीं होता है।

भूख और कुपोषण वास्तव में बहुत से बच्चों को स्कूल में उचित ध्यान देने में सक्षम होने से रोकते हैं— काफी छात्रों के लिए स्कूल में प्रदान किया जाने वाला दोपहर का भोजन एकमात्र भोजन होता है।

इस संकट से उबरने के लिए तत्काल रूप से क्या किया जा सकता है

अर्ली चाइल्डहुड केयर एंड एजुकेशन(ई.सी.सी.ई.) एक बच्चे के विकास में एक अत्यंत महत्वपूर्ण चरण होने के साथ ही शुरुआती ग्रेड स्कूल की तैयारी के लिए भी काफ़ी महत्वपूर्ण है। एक बार ई.सी.सी.ई.की पहुँच पूरे देश में स्थापित हो जाती है तो स्कूल के लिए तैयारी के अभाव की समस्या और छात्रों के शुरुआती कक्षाओं में इतनी जल्दी पीछे रहने की समस्या, छात्रों की भावी पीढ़ियों के लिए बहुत कम हो जाएगी।

हालाँकि, सभी छात्र-छात्राएँ जो पहले से ही ग्रेड स्कूल में हैं और जो वर्तमान में इस संकट के केंद्र में बने हुए हैं, उन सभी को इस स्थिति से ऊपर लाने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर एक बड़ा अभियान चलाना होगा एवं उन बच्चों के लिए तत्काल कार्य करना होगा जो शुरुआती ग्रेड्स में पीछे छूट गए हैं।

इस समस्या की गंभीरता के कारण अकेले शिक्षकों को ही इसके लिए देशव्यापी प्रयास करने के लिए नहीं कहा जा सकता है। इसके लिए सबके समर्पण की आवश्यकता है जिसमें समुदाय की भागीदारी अत्यंत ज़रूरी है। विद्यार्थी स्वयं भी इस संबंध में पहला प्रमुख संसाधन हो सकते हैं। दुनिया भर के अध्ययन *पीयर लर्निंग* (साथियों से सीखना) को ना केवल शिक्षार्थी के सीखने के लिए बल्कि शिक्षकों के लिए बेहद प्रभावी बताते हैं। एक पुरानी भारतीय कहावत है कि "ज्ञान एकमात्र ऐसी वस्तु है जो बाँटने से बढ़ती है।" वास्तव में, प्राचीन गुरुकुल प्रणाली की भी यह महत्वपूर्ण पहचानों में से एक था। *पीयर ग्रुप्स* की स्थापना महज़ बुनियादी साक्षरता एवं संख्याज्ञान तक ही नहीं बल्कि विद्यालय स्तर पर सभी विषयों के साथ इसे स्थापित किया जाना चाहिए। इससे सीखने के परिणाम एवं प्रतिफल बेहतर होंगे।

स्थानीय समुदाय से मदद के प्रयास भी किए जाने चाहिए। स्थानीय समुदाय के वे पढ़े-लिखे सदस्य जो संकट में पढ़ाने और सहायता करने की इच्छा रखते हैं, शिक्षकों की सलाह एवं मार्गदर्शन के तहत, स्कूल के दौरान या बाद में उपचारात्मक कक्षाओं के माध्यम से छात्रों की मदद करेंगे। स्थानीय समुदाय के ये सदस्य, छात्रों और शिक्षकों के बीच भाषा के अंतर को भी दूर करने में सक्षम होंगे। ये स्थानीय प्रशिक्षक सच्चे नायक होंगे। प्रयास होगा कि अधिकांश स्थानीय प्रशिक्षक महिलाएँ और लड़कियाँ हों।

© NCERT not to be republished

यहाँ यह महत्वपूर्ण होगा कि स्थानीय समुदाय के *वॉलांटियर्स* की इस मिशन में शामिल होने की प्रक्रिया आसान हो। *वॉलांटियर्स* के रूप में समुदाय के जो योग्य सदस्य अपने समुदायों या राष्ट्र के लिए एक सेवाभावी काम करना चाहते हैं, उनका स्वागत किया जाना चाहिए। उन्हें शिक्षकों के मार्गदर्शन और समन्वय के तहत बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान के विशेष पहलुओं को सिखाने के मौके दिए जाने चाहिए। यदि समुदाय का प्रत्येक साक्षर सदस्य किसी एक छात्र/व्यक्ति को पढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध हो सकता है तो इससे देश का परिदृश्य बहुत जल्दी बदल जाएगा। इस मिशन को अत्यधिक प्रोत्साहन और समर्थन किया जाएगा।

शिक्षकों के रिक्त पदों को जल्द से जल्द भरा जाना चाहिए। वंचित क्षेत्रों या उन क्षेत्रों में जहाँ शिक्षक-बच्चे का अनुपात (पी.टी.आर.) ज़्यादा हो या जहाँ साक्षरता की दर निम्न हो, वहाँ स्थानीय शिक्षकों, विशेष रूप से महिला शिक्षकों को नियुक्त करने पर विशेष रूप से ध्यान दिया जाना चाहिए। वर्तमान शिक्षकों एवं भविष्य के शिक्षकों को ई.सी.सी.ई. के प्रासंगिक पहलुओं में प्रशिक्षित किया जाएगा। इससे वे ग्रेड 1 और 2 के विभिन्न स्तरों के छात्रों को खेल-आधारित और मल्टीलेवल लर्निंग तरीकों से सिखाने में सक्षम होंगे।

शिक्षाक्रम में बुनियादी साक्षरता एवं संख्याज्ञान पर अतिरिक्त ध्यान दिया जाएगा और प्राथमिक स्तर पर आमतौर पर पढ़ने, लिखने, बोलने, गिनने, अंकगणित और गणितीय सोच पर ध्यान केंद्रित करना महत्वपूर्ण होगा। प्राथमिक विद्यालयों में इन क्षेत्रों पर विशेष ध्यान देने के लिए प्रतिदिन अतिरिक्त समय दिया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त ऐसा देखा गया है कि वर्ष भर में विभिन्न मौकों पर इन विषयों से संबंधित गतिविधियाँ करने से छात्रों का सीखना रोचक एवं सफल रहता है।

अंत में हमें बच्चों के पोषण और स्वास्थ्य (मानसिक स्वास्थ्य भी) पर भी गंभीरतापूर्वक काम करना होगा। इसके लिए स्कूलों में पौष्टिक भोजन की व्यवस्था की जाएगी तथा बच्चों की मदद के लिए सामाजिक कार्यकर्ताओं और परामर्शदाताओं की मदद ली जाएगी। इसके साथ ही वर्तमान में संचालित गरीबी उन्मूलन के कई सारे कार्यक्रमों, जो स्कूली व्यवस्था के दायरे के बाहर के हैं, से भी मदद मिलेगी। कई सारे अध्ययनों से यह पता चलता है कि सुबह का पौष्टिक नाश्ता कई सारे मुश्किल विषयों को समझाने में काफी मददगार होता है। इसके लिए माध्यान्ह भोजन के अलावा सुबह के समय पौष्टिक नाश्ते की भी व्यवस्था की जाएगी।

विद्यार्थियों के जल्द से जल्द बुनियादी साक्षरता एवं संख्याज्ञान प्राप्त करने में उन्हें हर स्तर पर मदद करने वाले इस राष्ट्रीय अभियान के लिए सुझाए गए उपायों में निम्न बातें शामिल हैं—

P2.1. मध्याह्न भोजन कार्यक्रम का विस्तार

पूर्व-प्राथमिक और प्राथमिक स्कूल के छात्रों को पौष्टिक नाश्ता (जैसे— दूध और एक केला) और दोपहर का भोजन दोनों दिया जाए। यह नाश्ते और दोपहर के भोजन के बीच के समय को अधिक उत्पादक बनाने में मदद करेगा, विशेष रूप से वंचित पृष्ठभूमि के छात्रों के लिए। भोजन की गुणवत्ता

© NCERT not to be republished

सुनिश्चित करने के लिए सुबह और दोपहर के भोजन के कार्यक्रमों पर होने वाले खर्च को मँहगाई घटने-बढ़ने के अनुसार तय करना होगा। इसकी गुणवत्ता को सुनिश्चित करने के लिए यह ज़रूरी है।

P2.2.विद्यालयों में बुनियादी साक्षरता एवं संख्याज्ञान पर ध्यान केंद्रित कर इसे बढ़ावा देना

स्कूल और कक्षा 1 से 5 तक के पाठ्यक्रम एवं समयसारिणी को फिर से तैयार करना होगा ताकि बुनियादी साक्षरता एवं संख्याज्ञान पर ध्यान केंद्रित किया जा सके। इससे छात्रों को पढ़ने और गणित के प्रति रोचक माहौल मिलेगा। इस दिशा में जो पहल की जाएगी उसमें निम्न बातें शामिल हैं—

i. पहली, दूसरी और तीसरी कक्षाओं के लिए दिन समर्पित रूप से गणित और पढ़ने के घंटे, एवं चौथी व पाँचवी कक्षा के लिए एक अतिरिक्त घंटा लेखन के लिए तय किया जाए। नाश्ते और दोपहर के भोजन के बीच का समय इन विषयों के लिए सबसे प्रभावी समय हो सकता है।

ii. वर्ष में कई बार "भाषा सप्ताह" और "गणित सप्ताह" जैसे कार्यक्रम आयोजित हों जिससे बच्चे उनमें प्रतिभाग करें एवं भाषा एवं गणित के इर्द-गिर्द कई तरह की गतिविधियों का प्रदर्शन कर सकें।

iii. नियमित रूप से "भाषा मेला" और "गणित मेला" जैसे कार्यक्रम आयोजित हों। इन दोनों विषयों में बच्चे अपनी क्षमताओं का प्रदर्शन करें; इसके साथ ही माता-पिता, शिक्षक, समुदाय के सदस्यों और पड़ोसी स्कूलों को भी इसमें शामिल किया जाए जिससे यह एक सामुदायिक कार्यक्रम भी बन सके।

iv. साप्ताहिक रूप से भाषा और गणित-केंद्रित स्कूल असेंबली का आयोजन किया जाए एवं भाषा और गणित से संबंधित गतिविधियों के माध्यम से लेखकों और गणितज्ञों की वर्षगाँठ आदि को उत्सवों के रूप में मनाया जाए।

v. पुस्तकालय के आसपास साप्ताहिक गतिविधियाँ की जानी चाहिए, जैसे— कहानी, रंगमंच, समूह में पढ़ना, लिखना और बच्चों के द्वारा बनाए मूल लेखन और अन्य कलाओं का प्रदर्शन किया जा सके।

vi. साप्ताहिक मज़ेदार पहेली-हल करने जैसे सत्र किए जाने चाहिए जो स्वाभाविक रूप से तार्किक और गणितीय सोच को विकसित करने में मदद करें।

vii. "कक्षाकक्षिए गणित" और "व्यावहारिक जीवन में मौजूदा गणित" के बीच संबंध का पता करने के लिए नियमित रूप से गतिविधियाँ करवायी जानी चाहिए।

P2.3. भाषा और गणित की कार्यपुस्तिकाएँ

स्कूल की पाठ्यपुस्तक के अलावा कक्षा 1 से 5 के प्रत्येक बच्चे के पास भाषा और गणित की कार्यपुस्तिकाएँ भी हों। इससे प्रत्येक बच्चे को अपनी गति से काम करने के लिए कक्षा स्तर के अनुरूप, उपयुक्त, रचनात्मक और आकर्षक अभ्यास के अवसर मिलेंगे। यह पाठ्यपुस्तक के पूरक के रूप में काम करेगी जिससे पाठ पर विभिन्न तरह के अभ्यास बनाने में मदद मिलेगी। इससे शिक्षक का समय भी बचेगा एवं शिक्षकों को यह पहचानने में मदद मिलेगी कि प्रत्येक बच्चा क्या कर सकता है एवं उसकी मदद के लिए क्या किया जा सकता है।

© NCERT not to be republished

P2.4. भाषा और गणित से संबंधित संसाधनों का राष्ट्रीय स्तर पर संकलन की व्यवस्था

National Teacher's Portal (DIKSHA) में बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान पर उच्च गुणवत्ता वाले संसाधनों का एक विशेष संयोजन किया जाएगा। ये रिसोर्स देशभर से एकत्रित किए जाएँगे और इनका उपयोग नीचे उल्लेखित दो विशेष पहलों के लिए किया जाएगा।

P2.5. नेशनल ट्यूटरस प्रोग्राम (एन.टी.पी.)

एक एन.टी.पी. स्थापित किया जाएगा, जहाँ प्रत्येक स्कूल में सबसे अच्छा प्रदर्शन करने वाले को ट्यूटर्स के रूप में सप्ताह में पाँच घंटे के लिए इस कार्यक्रम में शामिल किया जाएगा। ये ट्यूटर्स अन्य विद्यार्थी (आमतौर पर नीची कक्षाओं वाले), जिन्हें मदद की ज़रूरत होगी, के लिए ट्यूटर का काम करेंगे। URG के ट्यूटर्स का चयन विशेष रूप से प्रोत्साहित किया जाएगा। पीयर ट्यूटर के रूप में चुने जाने को एक सम्मानजनक स्थिति माना जाएगा। राज्य हर साल इसके लिए एक प्रमाण पत्र भी देगी कि कितने समय इन्होंने विद्यालय स्तर पर सेवा दी।

P2.6. रेमेडियल इन्सट्रक्संन ऐड्स प्रोग्राम

शुरूआती 10 वर्षों के लिए एक अस्थायी 10 वर्षीय परियोजना के रूप में रेमेडियल इन्सट्रक्संन ऐड्स कार्यक्रम (आर.आई.ए.पी.) को स्थापित किया जाएगा जो स्थानीय समुदायों से अनुदेशकों (इंस्ट्रक्टर्स विशेषकर महिलाएँ) की पहचान करेगा। ये अनुदेशक उन छात्रों की औपचारिक रूप से मदद करेंगे जो बहुत पीछे रह गए हैं। ये अनुदेशक (इन्सट्रक्सनल ऐड्स) स्कूल के समय के बाद, स्कूल समय के दौरान तथा लंबे अवकाश के दिनों में विशेष कक्षाओं को आयोजन करेंगे। इतने पीछे रह गए विद्यार्थी बिना किसी अतिरिक्त मदद के आगे नहीं बढ़ सकते। जहाँ भी और जब भी संभव होगा इन बच्चों को उनकी सीखने की गति और स्तर के अनुसार समूह भी बनाए जाएँगे।

इन्सट्रक्सनल सहयोगी सही मायनों में स्थानीय नायक होंगे—वे ऐसे छात्रों को वापस लाएँगे जो स्कूल से बाहर थे या स्कूल में उपस्थित नहीं होते। IAs स्थानीय समुदायों में से होंगे और वो या तो स्नातक या कक्षा 12 उत्तीर्ण होंगे। यह इस पर निर्भर करेगा कि उनके समय में उनके इलाके में सबसे अधिक शिक्षण जिस भी स्तर तक उपलब्ध था उसमें वो अच्छा प्रदर्शन करने वालों में से रहे हैं।

इन्सट्रक्सनल सहयोगी के चुनाव में सामाजिक और आर्थिक रूप से वंचित समुदायों को विशेष रूप से प्रोत्साहित किया जाएगा ताकि इन स्थानीय रोल मॉडल्स का विविध संग्रह सुनिश्चित किया जा सके। यह सुनिश्चित करना होगा कि अधिकांश IAs महिलाएँ हों। उनसे उम्मीद होगी कि वे अन्य महिलाओं को सशक्त बनाने में मदद करेंगी और ज़्यादा से ज़्यादा महिलाओं को अपने समुदायों की शैक्षिक प्रणाली का हिस्सा बनने में मदद करेंगी। इससे स्कूली शिक्षा में लड़कियों के नामांकन और ठहराव में भी बहुत मदद होगी। इस पद के लिए प्रशिक्षण विशेष रूप से बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान के शिक्षण पर केंद्रित होगा।

अगर इन्सट्रक्सनल ऐड्स (IAs) यदि बी.एड. करना चुनते हैं तो उन्हें उचित प्रोत्साहन दिया जाएगा।

© NCERT not to be republished

इसके बाद अगर वो शिक्षक बनना चाहते हैं तो उनके IA के रूप में किए गए कार्य के अनुभव को चुनाव में वरीयता दी जाएगी। इसके साथ ही आँगनवाड़ियों और पूर्व प्राथामिक विद्यालय में चाइल्डहुड ऐड्केशन शिक्षक बनने के लिए भी इनको प्रशिक्षित किया जाएगा।

इस प्रयास की सफलता दो महत्वपूर्ण बातों पर निर्भर करती है। यह सुनिश्चित करना होगा कि इन्सट्रक्सनल ऐड्स का चुनाव निष्पक्षता से किया जाए और उनके काम के लिए उन्हें ज़रूरी पुस्तिकाएँ एवं सामग्री भी दी जाएँ।

P.2.7 बड़े पैमाने पर समुदाय और स्वैच्छिक कार्यकर्ताओं की भागीदारी को प्रोत्साहित करना

योग्य स्वैच्छिक कार्यकर्ताओं (जैसे कि सेवानिवृत्त शिक्षक और सेना के अधिकारी, पड़ोसी स्कूलों के योग्य छात्र, और देशभर से सामाजिक रूप से जागरूक कॉलेज के स्नातक) को भी बड़े पैमाने पर गैर-लाभाकारी तरीके से एन.टी.पी. और आर.आई.ए.पी. में शामिल करने का प्रयास किया जाएगा। ये सभी शैक्षणिक वर्ष के दौरान तथा गर्मी की छुट्टियों में भी अपने समुदायों और देश के लिए सेवाभावी रूप से कार्य करेंगे। इस प्रकार एन.टी.पी. और आर.आई.ए.पी. दोनों कार्यक्रमों में दो धाराएँ होंगी— पहला पारंपरिक (पीयर ट्यूटर्स और स्थानीय समुदाय से चुने गए और परिश्रमिक प्राप्त IAs) और दूसरा, स्वैच्छिक: इन कार्यक्रमों के विस्तार के इन दोनों साधनों को अत्यधिक प्रोत्साहित किया जाएगा। स्वयंसेवक को राज्य और देश के लिए उनके अमूल्य योगदान का सम्मान करते हुए भारत सरकार (जी.ओ.आई.) से प्रमाण पत्र भी प्रदान किया जाएगा और ट्यूटर या IAs के रूप में दिए गए समय का उसमें हवाला दिया जाएगा।

P.2.8. एन.टी.पी. और आर.आई.ए.पी. कार्यक्रमों का प्रबंधन

शिक्षकों की यह ज़िम्मेदारी होगी कि वे कक्षा में प्रत्येक छात्र के सीखने के स्तर का आकलन करें, और उन छात्रों की पहचान करें, जो योग्य शिक्षक बनेंगे। साथ ही वे उन छात्रों की भी पहचान करेंगे जो एन.टी.पी. ट्यूटर्स और आर.आई.ए.पी.उपचारात्मक सत्रों से लाभ उठा सकते हैं। शिक्षक IAs की भर्ती के लिए प्रिंसिपल के साथ मिलकर काम करेंगे, और एन.टी.पी. और आर.आई.ए.पी. दोनों कार्यक्रमों के लिए इच्छुक स्वयं सेवकों को नियुक्त करने पर विचार करेंगे। शिक्षक प्रत्येक बच्चे की प्रगाति को सुनिश्चित करने के लिए ट्यूटर्स और IAs के साथ प्रबंधन और लगातार काम करेंगे और सुनिश्चित करेंगे कि प्रत्येक बच्चा जल्द से जल्द औसत कक्षा के स्तर के साथ सीख सकें।

P.2.9. नियमित रूप से एडप्टिव असेसमेंट

स्कूलों में सभी स्तरों पर एडप्टिव असेसमेंट की एक मज़बूत प्रणाली विकसित और कार्यान्वित की जाएगी। शिक्षकों को नियमित रूप से प्रत्येक छात्र की प्रगति का मूल्यांकन करने में मदद करने के लिए और यह पता लगाने के लिए कि प्रत्येक छात्र सीखने की निरंतरता पर कहाँ है, यह ज़रूरी है। यह प्रक्रिया छात्रों के लिए सटीक और व्यक्तिगत शिक्षण योजना बनाने में काफ़ी मदद करती है। एडप्टिव असेसमेंट

© NCERT not to be republished

परीक्षाओं में स्मृति आधारित प्रक्रियाओं को कम करने में मदद करेगा। कंप्यूटर-आधारित एडप्टिव असेसमेंट पहले माध्यमिक विद्यालय में लागू किया जाएगा। 2023 तक जब सभी स्कूलों में कंप्यूटर और टैबलेट उपलब्ध हो जाएँगे तब सभी छात्र इस प्रक्रिया के अंतर्गत आ जाएँगे।

P2.10. शिक्षकों के सहायक के रूप में अन्य तकनीकी उपक्रमों की योजना बनाना

शिक्षक को विभिन्न तकनीकी उपक्रम उपलब्ध कराए जाएँगे। विशेषकर कंप्यूटर, टैबलेट, स्मार्टफ़ोन और संबंधित सॉफ़्टवेयर उनके लिए व्यापक रूप से उपलब्ध होंगे। इस तरह के उपक्रम में विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में स्मार्टफ़ोन और टैबलेट पर ऐप और गेम शामिल होंगे, जो साक्षरता, संख्याज्ञान और अन्य मूलभूत पाठ्यक्रम सामग्री को सिखाने में मदद करते हैं। इससे एडक्टिव असेसमेन्ट और व्यक्तिगत रूप से सीखने के भी कई अवसर मिलेंगे। इस तरह के उपक्रमों को कभी भी शिक्षकों के विकल्प के रूप में नहीं देखा जाएगा, बल्कि शिक्षक और छात्रों द्वारा लंर्निग एड्स के रूप में इनका उपयोग किया जाएगा।

P2.11. पहली कक्षा के सभी छात्रों के लिए स्कूल तैयारी के लिए मॉड्यूल

जैसा कि विभिन्न साक्ष्यों से पता चलता है कि बड़ी संख्या में छात्र पहली कक्षा के पहले महीने के भीतर ही पीछे रह जाते हैं। 2019 में प्रारंभ से पहली कक्षा में तीन महीने के "स्कूल तैयारी मॉड्यूल" से शुरुआत होंगी जो यह सुनिश्चित करने में मदद करेगा कि छात्र क्या जानते हैं और कितना जानते हैं। सामान्यत: पहली कक्षा के पाठ्यक्रम को शुरू करने से पहले यह तत्परता के साथ बच्चों के सीखने के स्तर को जानने के लिए बेहद जरूरी है। रा.शै.अं.प्र.प. इस स्कूल तैयारी मॉडयूल के लिए एक फ्रेम वर्क एवं पाठ्यक्रम और शैक्षणिक रणनीति विकसित करेगा जो सभी जगह पहली कक्षा के शिक्षकों को वितरित किया जाएगा। पहली कक्षा के पाठ्यक्रम से संबंधित कार्यपुस्तिकाओं और अन्य शिक्षण सामग्री भी इससे जुड़ी हुई होगी।

छात्रों के प्रति सहानुभूति और सहायता के कौशल विकसित करने के साथ ही इस मॉड्यूल पर कार्य करने के दौरान छात्र एक-दूसरे की मदद करेंगे। यह एक ठोस आधार सुनिश्चित करेगा और सभी शिक्षार्थियों में अपनी स्कूली शिक्षा के लिए उत्साह और साथियों के लिए सहानुभूति विकसित करेगा। ये मॉड्यूल अक्षर,शब्द, रंग, आकार और संख्याओं के साथ खेलने के मौके प्रदान करेगा और साथ ही सक्रिय रूप से अभिभावकों को भी इसमें शामिल करेगा।

P2.12. अभिभावकों की भागीदारी का महत्व

कई शैक्षिक अनुसंधान बच्चों की शिक्षा पर घर के वातावरण के महत्वपूर्ण प्रभाव की ओर इशारा करते हैं। अभिभावकों की साक्षरता, संख्याज्ञान या शैक्षिक स्थिति की परवाह किए बिना उनके बच्चों के सीखने को अनुकूलित करने में उनका सहयोग काफ़ी महत्वपूर्ण है। अभिभावकों को अपने बच्चों के शिक्षकों के साथ हर साल कम से कम दो बार और उससे भी अधिक बार मिलने के लिए कहा जाएगा ताकि वे अपने बच्चों की शिक्षा को ट्रैक करने, प्रोत्साहित करने और उनका अनुकूलन करने में मदद

कर सकें। शिक्षक भी नियमित रूप से बच्चों के स्कूल की पढ़ाई, सीखने और प्रगति में अभिभावकों की भागीदारी को विकसित करने के प्रयास करेंगे। इसके लिए वे ऐसी वर्कशीट, गतिविधियाँ या असाइनमेंट देंगे जो बच्चे घर पर अपने अभिभावक की मदद से कर सकेंगे।

P2.13. बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान के लिए शिक्षक शिक्षा का नया स्वरूप

सेवा पूर्व या सेवा के दौरान किए जाने वाले शिक्षक शिक्षा या प्रशिक्षणों में बुनियादी भाषा एवं गणित के शिक्षण के साथ साथ ई.सी.सी.इ. एवं बहुस्तरीय गतिविधि-आधारित शिक्षण पर नए सिरे से बल दिया जाएगा। यह बदलाव शिक्षक के लिए विशेष रूप से पहली एवं दूसरी कक्षा में कार्य करने वाले शिक्षकों के लिए काफी प्रासंगिक होगा।

शिक्षक शिक्षा के सभी स्तरों पर रटंत प्रणाली की जगह सीखने के साथ-साथ ज़्यादा रोचक कक्षाएँ, एडक्टिव और फॉरमेटिव असेसमेन्ट आदि की रणनीतियाँ शामिल होगी। इसके साथ ही शिक्षण यह भी समझने का प्रयास करेंगे कि किस प्रकार ट्यूटर्स, रेमेडियल इंस्ट्रक्टर और तकनीक आदि (जैसे स्मार्टफोन या टैबलेट के लिए ऐप) का इस्तेमाल बच्चों के सीखने के लिए किया जाना चाहिए। पहली कक्षा में पढ़ाने वाले सभी शिक्षकों को इस बात का प्रशिक्षण दिया जाएगा कि वो किस प्रकार पहले तीन महीनों मे किए जाने वाले 'स्कूल तैयारी मॉड्यूल' को नियमित पाठ्यक्रम में शामिल कर सकते हैं। इसके लिए एक 5 दिवसीय क्षमतासंवर्धन कार्यशालाओं को आयोजन किया जाएगा।

P2.14. शिक्षकों के समुचित पदस्थापन और उनकी बेहतर कार्य-स्थितियों व प्रत्येक स्कूल में शिक्षक-छात्र अनुपात 30:1 के नीचे सुनिश्चित करना

बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान के लिए कई उपाय करने की आवश्यकता होगी। जैसे पी.टी.आर. 30:1 से कम हो। शिक्षक रिक्तियों को तत्काल भर दिया जाएगा ताकि पी.टी.आर. न केवल एक क्लस्टर या ब्लॉक स्तर पर बल्कि हर स्कूल में सुनिश्चित हो। स्थानीय क्षेत्रों के शिक्षकों को प्राथमिकता दी जाएगी जिससे बच्चों एवं शिक्षक के बीच भाषा को लेकर जो अंतर है उसको दूर किया जा सके। शिक्षकों की उपस्थिति कक्षा में उचित पी.टी.आर. सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है। शिक्षकों के लिए ऐसी परिस्थितियाँ बनानी होंगी जिससे लगभग 100 प्रतिशत शिक्षक उपस्थिति प्राप्त की जा सके। विशेष रूप से, शिक्षकों को प्रशासनिक या अन्य कार्यों के बजाय अपने छात्रों के साथ ज्यादा समय बिताने के अवसर मिले।

P2.15. स्कूल और सार्वजनिक (सरकारी) पुस्तकालयों को विस्तार देना एवं पढ़ने और संवाद करने की संस्कृति को विकसित करना

पढ़ने की संस्कृति बनाने के लिए, देश भर में सार्वजनिक और स्कूल पुस्तकालयों का विस्तार किया जाएगा, और इसमें स्थानीय और क्षेत्रीय भाषाओं में विशेष रूप से बच्चों की किताबें भी शामिल होंगी। स्कूल और स्कूल परिसरों में स्थानीय भाषाओं में पुस्तकों का बड़े स्तर पर चयन किया जाएगा और शिक्षक सक्रिय रूप से बच्चों को किताबें पढ़ने के

© NCERT not to be republished

लिए एवं उन्हें घर ले जाने के लिए प्रोत्साहित करेंगे। छात्रों को उनकी पसंदीदा पुस्तकों/कहानियों के अंश पढ़ने और मौखिक सारांश एवं अपने स्वयं के विचारों को प्रत्येक सप्ताह या महीने में अपनी कक्षा के सामने प्रस्तुत करने के लिए कहेंगे ताकि पढ़ने के साथ-साथ संवाद एवं बोलने का कौशल विकसित हो सके। चूँकि छात्र एक से अधिक भाषा सीखते हैं तो इन पाठ और प्रस्तुतियों को अन्य भाषाओं में भी तैयार किया जाएगा।

P2.16. परामर्शदाताओं और सामाजिक कार्यकर्ताओं की भूमिका

सामाजिक कार्यकर्ताओं और परामर्शदाताओं को छात्रों के साथ काम करने के लिए स्कूल में लिया जाएगा। वे बच्चों, उनके माता-पिता, शिक्षक, ट्यूटर्स, IAs और समुदाय के अन्य सदस्यों के साथ काम करेंगे तथा स्कूल में बच्चों के ठहराव को सुनिश्चित करेंगे तथा उनके मानसिक स्वास्थ्य का भी ख्याल रखेंगे।

P2.17. स्थानीय समुदाय और स्वैच्छिक कार्यकर्ताओं को संगठित करना

शिक्षकों, अभिभावकों, छात्रों, समुदाय के सदस्यों और आमजनों को सीखने की समस्या को समाप्त करने के लिए भागीदार होना होगा। सीखने की समस्या को दूर करने के इस राष्ट्रीय मिशन में सबकी भागीदारी सुनिश्चित करनी होगी। इस दिशा में बड़े पैमाने पर मीडिया अभियान चलाना होगा। इस दिशा में स्कूलों और उनके समुदायों के बीच प्रत्यक्ष रूप से संचार को प्राथमिकता दी जाएगी जिससे कि देश भर से इसके लिए उत्साही नागरिकों की भागीदारी को बढ़ाया जा सके। इससे एन.टी.पी. और आर.आई.ए.पी. कार्यक्रमों के लिए समुदाय के सदस्यों और स्वैच्छिक कार्यकर्ता के जुड़ाव में भी मदद होगी। इसके साथ ही कम से कम, यह सिद्धांत कायम हो कि प्रत्येक साक्षर नागरिक कम से कम एक बच्चे (या वयस्क) को पढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध हो।

अंत में पुन: दोहराने के लिए हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता 2025 तक सभी प्राथमिक विद्यालय में सार्वभौमिक रूप से बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान को हासिल करना है। कोई भी नीति हमारे छात्रों के लिए काफी हद तक अप्रासंगिक हो जाएगी यदि बुनियादी शिक्षा (पढ़ने, लिखने और बुनियादी साक्षरता एवं संख्याज्ञान स्तर पर अंकगणित) को हासिल नहीं कर लेते हैं।

© NCERT not to be republished